1 Peter

1 Greetings from Peter, an apostle of Jesus Christ.

To God's chosen people who are away from their homes—people scattered all over the areas of Pontus, Galatia, Cappadocia, Asia, and Bithynia. 2 God planned long ago to choose you and to make you his holy people, which is the Spirit's work. God wanted you to obey him and to be made clean by the blood sacrifice of Jesus Christ.

I pray that you will enjoy more and more of God's grace and peace.

A Living Hope

3 Praise be to the God and Father of our Lord Jesus Christ. God has great mercy, and because of his mercy he gave us a new life. This new life brings us a living hope through Jesus Christ's resurrection from death. 4 Now we wait to receive the blessings God has for his children. These blessings are kept for you in heaven. They cannot be ruined or be destroyed or lose their beauty.

5 God's power protects you through your faith, and it keeps you safe until your salvation comes. That salvation is ready to be given to you at the end of time. 6 I know the thought of that is exciting, even if you must suffer through different kinds of troubles for a short time now. 7 These troubles test your faith and prove that it is pure. And such faith is worth more than gold. Gold can be proved to be pure by fire, but gold will ruin. When your faith is proven to be pure, the result will be praise and glory and honor when Jesus Christ comes.

8 You have not seen Christ, but still you love him. You can't see him now, but you believe in him. You are filled with a wonderful and heavenly joy that cannot be explained. 9 Your faith has a goal, and you are reaching that goal—your salvation.

10 The prophets studied carefully and tried to

1 पतरस

1 पतरस की ओर से, जो यीशु मसीह का प्रेरित है।

परमेश्वर के उन चुने हुए लोगों के नाम जो पुन्तुस, गलातिया, कप्पदुकिया, एशिया और बिथुनिया के क्षेत्रों में सब कहीं फैले हुए हैं। 2तुम, जिन्हें परम पिता परमेश्वर के पूर्व-ज्ञान के अनुसार चुना गया है, जो अपनी आत्मा के कार्य द्वारा उसे समर्पित हो, जिन्हें उसके आज्ञाकारी होने के लिए और जिन पर यीशु मसीह के लहू के छिड़काव के पवित्र किए जाने के लिए चुना गया है।

तुम पर परमेश्वर का अनुग्रह और शांति अधिक से अधिक होते रहें।

सजीव आशा

3हमारे प्रभु यीशु मसीह का परम पिता परमेश्वर धन्य हो। मरे हुओं में से यीशु मसीह के पुनरुत्थान के द्वारा उसकी अपार करुणा में एक सजीव आशा पा लेने कि लिए उसने हमें नया जन्म दिया है। 4ताकि तुम तुम्हारे लिए स्वर्ग में सुरक्षित रूप से रखे हुए अजर-अमर दोष रहित अविनाशी उत्तराधिकार को पा लो।

5जो विश्वास से सुरक्षित है, उन्हें वह उद्धार जो समय के अंतिम छोर पर प्रकट होने को है, प्राप्त हो। 6इस पर तुम बहुत प्रसन्न हो। यद्यपि अब तुमको थोड़े समय के लिए तरह तरह की परीक्षाओं में पड़कर दुखी होना बहुत आवश्यक है। 7ताकि तुम्हारा परखा हुआ विश्वास जो आग में परखे हुए सोने से भी अधिक मूल्यवान है, उसे जब यीशु मसीह प्रकट होगा तब परमेश्वर से प्रशंसा, महिमा और आदर प्राप्त हो।

8यद्यपि तुमने उसे देखा नहीं है, फिर भी तुम उसे प्रेम करते हो। यद्यपि तुम अभी उसे देख नहीं पा रहे हो, किन्तु फिर भी उसमें विश्वास रखते हो और एक ऐसे आनन्द से भरे हुए हो जो अकथनीय एवं महिमामय है। 9और तुम अपने विश्वास के परिणामस्वरूप अपनी आत्मा का उद्धार कर रहे हो।

10इस उद्धार के विषय में उन नबियों ने, बड़े परिश्रम के साथ खोजबीन की है और बड़ी सावधानी के साथ पता लगाया है, जिन्होंने तुम पर प्रकट

learn about this salvation. They spoke about the grace that was coming to you. 11 The Spirit of Christ was in those prophets. And the Spirit was telling about the sufferings that would happen to Christ and about the glory that would come after those sufferings. The prophets tried to learn about what the Spirit was showing them—when it would happen and what the world would be like at that time.

12 It was made clear to them that their service was not for themselves. They were serving you when they told about the things you have now heard. You heard them from those who told you the Good News with the help of the Holy Spirit sent from heaven. Even the angels would like very much to know more about these things you were told.

होने वाले अनुग्रह के सम्बन्ध में भविष्यवाणी कर दी थी। 11उन नबियों ने मसीह की आत्मा से यह जाना जो मसीह पर होने वाले दुःखों को बता रही थी और वह महिमा जो इन दुःखों के बाद प्रकट होगी। यह आत्मा उन्हें बता रही थी। यह बातें इस दुनिया पर कब होंगी और तब इस दुनिया का क्या होगा।

12उन्हें यह दर्शा दिया गया था कि उन बातों का प्रवचन करते हुए वे स्वयं अपनी सेवा नहीं कर रहे थे बल्कि तुम्हारी कर रहे थे। वे बातें स्वर्ग से भेजे गए पवित्र आत्मा के द्वारा तुम्हें सुसमाचार का उपदेश देने वालों के माध्यम से बता दी गई थी। और उन बातों को जानने के लिए तो स्वर्गदूत तक तरसते हैं।

A Call to Holy Living

13 So prepare your minds for service. With complete self-control put all your hope in the grace that will be yours when Jesus Christ comes. 14 In the past you did not have the understanding you have now, so you did the evil things you wanted to do. But now you are children of God, so you should obey him and not live the way you did before. 15 Be holy in everything you do, just as God is holy. He is the one who chose you. 16 In the Scriptures God says, "Be holy, because I am holy."*

17 You pray to God and call him Father, but he will judge everyone the same way—by what they do. So while you are visiting here on earth, you should live with respect for God. 18 You know that in the past the way you were living was useless. It was a way of life you learned from those who lived before you. But you were saved from that way of living. You were bought, but not with things that ruin like gold or silver. 19 You were bought with the precious blood of Christ's death. He was a pure and perfect sacrificial Lamb. 20 Christ was chosen before the world was made, but he was shown to the world in these last times for you. 21 You believe in God

पवित्र जीवन के लिए बुलावा

13इसलिए मानसिक रूप से सचेत रहो और अपने पर नियन्त्रण रखो। उस वरदान पर पूरी आशा रखो जो यीशु मसीह के प्रकट होने पर तुम्हें दिया जाने को है। 14आज्ञा मानने वाले बच्चों के समान उस समय की बुरी इच्छाओं के अनुसार अपने को मत ढालो जो तुममें पहले थी, जब तुम अज्ञानी थे। 15बल्कि जैसे तुम्हें बुलाने वाला परमेश्वर पवित्र है, वैसे ही तुम भी अपने प्रत्येक कर्म में पवित्र बनो। 16शास्त्र भी ऐसा ही कहता है: "पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूँ।"*

17और यदि तुम, प्रत्येक के कर्मों के अनुसार पक्षपात रहित होकर न्याय करने वाले परमेश्वर को हे पिता कह कर पुकारते हो तो इस परदेसी धरती पर अपने निवास काल में सम्मानपूर्ण भय के साथ जीवन जीओ। 18तुम यह जानते हो कि चाँदी या सोने जैसी वस्तुओं से तुम्हें उस व्यर्थ जीवन से छुटकारा नहीं मिल सकता, जो तुम्हें तुम्हारे पूर्वजों से मिला है। 19बल्कि वह तो तुम्हें निर्दोष और कलंक रहित मेमने के समान मसीह के बहुमूल्य रक्त से ही मिल सकता है। 20इस जगत की सृष्टि से पहले ही उसे चुन लिया गया था किन्तु तुम लोगों के लिए उसे इन अंतिम दिनों में प्रकट किया गया। 21उस मसीह के कारण ही तुम उस परमेश्वर में विश्वास करते रहे जिसने उसे मरे हुओं में से पुनर्जीवित कर दिया और उसे

1:16 Quote from Lev. 11:44, 45; 19:2; 20:7.

1:16 देखें लैव्य. 11:44, 45; 19:2; 20:7

through Christ. God is the one who raised him from death and gave honor to him. So your faith and your hope are in God.

22 You have made yourselves pure by obeying the truth. Now you can have true love for your brothers and sisters. So love each other deeply—with all your heart. 23 You have been born again. This new life did not come from something that dies. It came from something that cannot die. You were born again through God's life-giving message that lasts forever. 24 The Scriptures say,

"Our lives are like the grass of spring,
and any glory we enjoy is like
the beauty of a wildflower.
The grass dries up and dies,
and the flower falls to the ground.
25 But the word of the Lord lasts forever."
Isaiah 40:6-8

And that word is the Good News that was told to you.

The Living Stone and the Holy Nation

2 So then, stop doing anything to hurt others. Don't lie anymore, and stop trying to fool people. Don't be jealous or say bad things about others. 2 Like newborn babies hungry for milk, you should want the pure teaching that feeds your spirit. With it you can grow up and be saved. 3 You have already tasted the goodness of the Lord.

4 The Lord Jesus is the living stone. The people of the world decided that they did not want this stone. But he is the one God chose as one of great value. So come to him. 5 You also are like living stones, and God is using you to build a spiritual house. You are to serve God in this house as holy priests, offering him spiritual sacrifices that he will accept because of Jesus Christ. 6 The Scriptures say,

"Look, I have chosen a cornerstone
of great value,
and I put that stone in Zion.

महिमा प्रदान की। इस प्रकार तुम्हारी आशा और तुम्हारा विश्वास परमेश्वर में स्थिर हो।

22अब देखो जब तुमने सत्य का पालन करते हुए, सच्चे भाईचारे के प्रेम को प्रदर्शित करने के लिए अपने आत्मा को पवित्र कर लिया है तो पवित्र मन से तीव्रता के साथ परस्पर प्रेम करने को अपना लक्ष्य बना लो। 23तुमने नाशमान बीज से पुर्नजीवन प्राप्त नहीं किया है बल्कि यह उस बीज का परिणाम है जो अमर है। तुम्हारा पुर्नजन्म परमेश्वर के उस सुसंदेश से हुआ है जो सजीव और अटल है। 24क्योंकि शास्त्र कहता है:

"सभी प्राणी घास की तरह हैं,
और उनकी सज-धज
जंगली फूल की तरह है।
घास मर जाता है और
फूल गिर जाते हैं।
25 किन्तु प्रभु का वचन सदा-सर्वदा
टिका रहता है।"
यशायाह 40:6-8

और यह वही सुसमाचार है जिसका तुम्हें उपदेश दिया गया है।

सजीव पत्थर और पवित्र प्रजा

2 इसलिए सभी बुराइयों, छल-छद्मों, पाखण्ड तथा वैर-विरोधों और परस्पर दोष लगाने से बचे रहो। 2नवजात बच्चों के समान शुद्ध आध्यात्मिक दूध के लिए लालायित रहो ताकि उससे तुम्हारा विकास और उद्धार हो। 3अब देखो, तुमने तो प्रभु के अनुग्रह का स्वाद ले ही लिया है।"

4यीशु मसीह के निकट आओ। वह सजीव "पत्थर" है। उसे संसारी लोगों ने नकार दिया था किन्तु जो परमेश्वर के लिए बहुमूल्य है और जो उसके द्वारा चुना गया है। 5तुम भी सजीव पत्थरों के समान एक आध्यात्मिक मन्दिर के रूप में बनाए जा रहे हो ताकि एक ऐसे पवित्र याजकमण्डल के रूप में सेवा कर सको जिसका कर्तव्य ऐसे आध्यात्मिक बलिदान समर्पित करना है जो यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर को ग्राह्य हों। 6शास्त्र में लिखा है:

"देखो, मैं सिय्योन में एक कोने का
पत्थर रख रहा हूँ, जो बहुमूल्य है
और चुना हुआ है इस पर

Anyone who trusts in him
will never be disappointed." *Isaiah 28:16*

7 So, that stone means honor for you who believe.
But for those who don't believe he is

"the stone that the builders refused to accept,
which became the most important stone."
Psalm 118:22

8 For them he is also

"a stone that makes people stumble,
a rock that makes people fall."
Isaiah 8:14

People stumble because they don't obey what God says. This is what God planned to happen to those people.

9 But you are his chosen people, the King's priests. You are a holy nation, people who belong to God. He chose you to tell about the wonderful things he has done. He brought you out of the darkness of sin into his wonderful light.

10 In the past you were not a special people,
but now you are God's people.
Once you had not received mercy,
but now God has given you his mercy.

Live for God

11 Dear friends, you are like visitors and strangers in this world. So I beg you to keep your lives free from the evil things you want to do, those desires that fight against your true selves. 12 People who don't believe are living all around you. They may say that you are doing wrong. So live such good lives that they will see the good you do, and they will give glory to God on the day he comes.

Obey Every Human Authority

13 Be willing to serve the people who have authority in this world. Do this for the Lord. Obey the king, the highest authority. 14 And obey the leaders who are sent by the king. They are

जो कोई भी विश्वास करेगा उसे
कभी भी नहीं लजाना पड़ेगा।"
यशायाह 28:16

7तुम विश्वासियों के लिये बहुमूल्य है किन्तु जो विश्वास नहीं करते हैं उनके लिए:

"वही पत्थर जिसे शिल्पियों ने नकारा था
सब से महत्वपूर्ण कोने का पत्थर बन गया।"
भजन संहिता 118:22

8तथा वह बन गया:

"एक ऐसा पत्थर जिससे लोगों को ठेस लगे
और ऐसी एक चट्टान
जिससे लोगों को ठोकर लागे।"
यशायाह 8:14

लोग ठोकर खाते हैं क्योंकि वे परमेश्वर के वचन का पालन नहीं करते और बस यही उनके लिए ठहराया गया है।

9किन्तु तुम तो चुने हुए लोग हो याजकों का एक राज्य, एक पवित्र प्रजा एक ऐसा नर-समूह जो परमेश्वर का अपना है, ताकि तुम परमेश्वर के अद्‌भुत कर्मों की घोषणा कर सको। वह परमेश्वर जिसने तुम्हें अन्धकार से अद्‌भुत प्रकाश में बुलाया।

10 एक समय था जब तुम प्रजा नहीं थे
किन्तु अब तुम परमेश्वर की प्रजा हो।
एक समय था जब तुम दया के पात्र नहीं थे
किन्तु अब तुम पर परमेश्वर ने दया दिखायी है।

परमेश्वर के लिए जीओ

11हे प्रिय मित्रों, मैं तुमसे, जो इस संसार में अजनबियों के रूप में हो, निवेदन करता हूँ कि उन शारीरिक इच्छाओं से दूर रहो जो तुम्हारी आत्मा से जूझती रहती है। 12विधर्मियों के बीच अपना व्यवहार इतना उत्तम बनाये रखो कि चाहे वे अपराधियों के रूप में तुम्हारी आलोचना करें किन्तु तुम्हारे उत्तम कर्मों के परिणामस्वरूप परमेश्वर के आने के दिन वे परमेश्वर को महिमा प्रदान करें।

अधिकारी की आज्ञा मानो

13प्रभु के लिये हर मानव अधिकारी के अधीन रहो। 14राजा के अधीन रहो। वह सर्वोच्च अधिकारी है। शासकों के अधीन रहो। उन्हें उसने कुकर्मियों

sent to punish those who do wrong and to praise those who do good. 15 When you do good, you stop ignorant people from saying foolish things about you. This is what God wants. 16 Live like free people, but don't use your freedom as an excuse to do evil. Live as those who are serving God. 17 Show respect for all people. Love your brothers and sisters in God's family. Respect God, and honor the king.

The Example of Christ's Suffering

18 Slaves, be willing to serve your masters. Do this with all respect. You should obey the masters who are good and kind, and you should obey the masters who are bad. 19 One of you might have to suffer even when you have done nothing wrong. If you think of God and bear the pain, this pleases God. 20 But if you are punished for doing wrong, there is no reason to praise you for bearing that punishment. But if you suffer for doing good and you are patient, this pleases God. 21 This is what you were chosen to do. Christ gave you an example to follow. He suffered for you. So you should do the same as he did:

22 "He never sinned,
and he never told a lie."

Isaiah 53:9

23 People insulted him, but he did not insult them back. He suffered, but he did not threaten anyone. No, he let God take care of him. God is the one who judges rightly. 24 Christ carried our sins in his body on the cross. He did this so that we would stop living for sin and live for what is right. By his wounds you were healed. 25 You were like sheep that went the wrong way. But now you have come back to the Shepherd and Protector of your lives.

Wives and Husbands

3 In the same way, you wives should be willing to serve your husbands. Then, even those who have refused to accept God's teaching will be persuaded to believe because of the way you

को दण्ड देने और उत्तम कर्म करने वालों की प्रशंसा के लिए भेजा है। 15क्योंकि परमेश्वर की यही इच्छा है कि तुम अपने उत्तम कार्यों से मूर्ख लोगों की अज्ञान से भरी बातों को चुप करा दो। 16स्वतन्त्र व्यक्ति के समान जीओ किन्तु उस स्वतन्त्रता को बुराई के लिए आड़ मत बनने दो। परमेश्वर के सेवकों के समान जीओ। 17सबका सम्मान करो। अपने धर्म भाइयों से प्रेम करो। परमेश्वर का आदर के साथ भय मानो। शासक का सम्मान करो।

मसीह की यातना का दृष्टान्त

18हे सेवकों, यथोचित आदर के साथ अपने स्वामियों के अधीन रहो। न केवल उनके, जो अच्छे हैं और दूसरों के लिए चिंता करते हैं बल्कि उनके भी जो कठोर हैं। 19क्योंकि यदि कोई परमेश्वर के प्रति सचेत रहते हुए यातनाएँ सहता है और अन्याय झेलता है तो वह प्रशंसनीय है। 20किन्तु यदि बुरे कर्मों के कारण तुम्हें पीटा जाता है और तुम उसे सहते हो तो इसमें प्रशंसा की क्या बात है। किन्तु यदि तुम्हें तुम्हारे अच्छे कामों के लिए सताजा जाता है तो परमेश्वर के सामने वह प्रशंसा के योग्य है। 21परमेश्वर ने तुम्हें इसलिए बुलाया है क्योंकि मसीह ने भी हमारे लिए दुःख उठाये हैं और ऐसा करके हमारे लिए एक उदाहरण छोड़ा है ताकि हम भी उसी के चरण चिन्हों पर चल सकें।

22 "उसने कोई पाप नहीं किया और न ही
उसके मुख से कोई छल की
बात ही निकली।" *यशायाह 53:9*

23जब वह अपमानित हुआ तब उसने किसी का अपमान नहीं किया, जब उसने दुःख झेले, उसने किसी को धमकी नहीं दी, बल्कि उस सच्चे न्याय करने वाले परमेश्वर के आगे अपने आपको अर्पित कर दिया। 24उसने क्रूस पर अपनी देह में हमारे पापों को ओढ़ लिया। ताकि अपने पापों के प्रति हमारी मृत्यु हो जाये और जो कुछ नेक है उसके लिए हम जीयें। यह उसके उन घावों के कारण ही हुआ जिनसे तुम चंगे किये गये हो। 25क्योंकि तुम भेड़ों के समान भटक रहे थे किन्तु अब तुम अपने गड़रिये और तुम्हारी आत्माओं के रखवाले के पास लौट आये हो।

पत्नी और पति

3 इसी प्रकार हे पत्नियों, अपने अपने पतियों के प्रति समर्पित रहो। ताकि यदि उनमें से कोई परमेश्वर के वचन का पालन नहीं करते हों तो

live. You will not need to say anything. 2 Your husbands will see the pure lives that you live with respect for God. 3 It is not fancy hair, gold jewelry, or fine clothes that should make you beautiful. 4 No, your beauty should come from inside you—the beauty of a gentle and quiet spirit. That beauty will never disappear. It is worth very much to God.

5 It was the same with the holy women who lived long ago and followed God. They made themselves beautiful in that same way. They were willing to serve their husbands. 6 I am talking about women like Sarah. She obeyed Abraham, her husband, and called him her master. And you women are true children of Sarah if you always do what is right and are not afraid.

7 In the same way, you husbands should live with your wives in an understanding way, since they are weaker than you. You should show them respect, because God gives them the same blessing he gives you—the grace of true life. Do this so that nothing will stop your prayers from being heard.

Suffering for Doing Right

8 So all of you should live together in peace. Try to understand each other. Love each other like brothers and sisters. Be kind and humble. 9 Don't do wrong to anyone to pay them back for doing wrong to you. Or don't insult anyone to pay them back for insulting you. But ask God to bless them. Do this because you yourselves were chosen to receive a blessing. 10 The Scriptures say,

"If you want to enjoy true life
and have only good days,
then avoid saying anything hurtful,
and never let a lie come
out of your mouth.
11 Stop doing what is wrong, and do good.
Look for peace, and do all you can to help
people live peacefully.
12 The Lord watches over those who
do what is right,

तुम्हारे पवित्र और आदरपूर्ण चाल चलन को देखकर बिना किसी बातचीत के ही अपनी-अपनी पत्नियों के व्यवहार से जीत लिए जाएँ। 2तुम्हारा साज-श्रृंगार दिखावटी नहीं होना चाहिए। 3अर्थात् जो केशों की वेणियाँ सजाने, सोने के आभूषण पहनने और अच्छे-अच्छे कपड़ों से किया जाता है, 4बल्कि तुम्हारा श्रृंगार तो तुम्हारे मन का भीतरी व्यक्तित्व होना चाहिए जो कोमल और शान्त आत्मा के अविनाशी सौन्दर्य से युक्त हो। परमेश्वर की दृष्टि में जो मूल्यवान हो।

5क्योंकि बीते युग की उन पवित्र महिलाओं का, अपने आपको सजाने-सँवारने का यही ढंग था, जिनकी आशाएँ परमेश्वर पर टिकी हैं। वे अपने अपने पति के अधीन वैसे ही रहा करती थी। 6जैसे इब्राहीम के अधीन रहने वाली सारा जो उसे अपना स्वामी मानती थी। तुम भी बिना कोई भय माने यदि नेक काम करती हो तो उसी की बेटी हो।

7ऐसे ही हे पतियों, तुम अपनी पत्नियों के साथ समझदारी पूर्वक रहो। उन्हें निर्बल समझ कर, उनका आदर करो। जीवन के वरदान में उन्हें अपना सह उत्तराधिकारी भी मानो ताकि तुम्हारी प्रार्थनाओं में बाधा न पड़े।

सतकर्मों के लिए दुःख झेलना

8अन्त में तुम सब को समानविचार, सहानुभूतिशील, अपने बन्धुओं से प्रेम करने वाला, दयालु और नम्र बनना चाहिए। 9एक बुराई का बदला दूसरी बुराई से मत दो। अथवा अपमान के बदले अपमान मत करो बल्कि बदले में आशीर्वाद दो क्योंकि परमेश्वर ने तुम्हें ऐसा ही करने को बुलाया है। इसी से तुम्हें परमेश्वर के आशीर्वाद का उत्तराधिकारी मिलेगा। 10शास्त्र कहता है:

"जो जीवन का आनन्द उठाना चाहे
जो समय की सद्गति को देखना चाहे
उसे चाहिए वह कभी कहीं बुरे बोल न बोले।
वह अपने अधरों को छल वाणी से रोके।
11उसे चाहिए वह मुँह फेरे
उससे जो नेक नहीं होता।
वह उन कर्मों को सदा करे जो उत्तम हैं,
उसे चाहिए यत्नशील हो शांति पाने को
उसे चाहिए वह शांति का अनुसरण करे।
12 प्रभु की आँखें टिकी हैं उन्हीं पर जो उत्तम हैं
प्रभु के कान लगे उनकी प्रार्थनाओं पर

and he listens to their prayers.
But he is against those who do evil."
Psalm 34:12-16

[13] If you are always trying to do good, no one
can really harm you. [14] But you may suffer for
doing right. If that happens, you have God's
blessing. "Don't be afraid of the people who
make you suffer; don't be worried." [15] But keep
the Lord Christ holy in your hearts. Always be
ready to answer everyone who asks you to explain
about the hope you have. [16] But answer them in
a gentle way with respect. Keep your conscience
clear. Then people will see the good way you
live as followers of Christ, and those who say
bad things about you will be ashamed of what
they said.
[17] It is better to suffer for doing good than for
doing wrong. Yes, it is better if that is what God
wants.

[18] Christ himself suffered when
he died for you, and with that one death
he paid for your sins.
He was not guilty,
but he died for people who are guilty.
He did this to bring all of you to God.
In his physical form he was killed,
but he was made alive by the Spirit.

[19] And by the Spirit he went and preached to the
spirits in prison. [20] Those were the spirits who
refused to obey God long ago in the time of
Noah. God was waiting patiently for people while
Noah was building the big boat. And only a few—
eight in all—were saved in the boat through the
floodwater. [21] And that water is like baptism,
which now saves you. Baptism is not the washing
of dirt from the body. It is asking God for a clean
conscience. It saves you because Jesus Christ was
raised from death. [22] Now he has gone into
heaven. He is at God's right side and rules over
angels, authorities, and powers.

जो बुरे कर्म करते हैं,
प्रभु उनसे सदा मुख फेरता है।"
भजन संहिता 34:12-16

[13]यदि जो उत्तम है तुम उसे ही करने को लालायित
रहो तो भला तुम्हें कौन हानि पहुँचा सकता है।
[14]किन्तु यदि तुम्हें भले के लिए दुःख उठाना ही पड़े
तो तुम धन्य हो। "इसलिए उनके किसी भी भय से
न तो भयभीत होवो और न ही विचलित। [15]अपने
मन में मसीह को प्रभु के रूप में आदर दो। तुम
सब जिस विश्वास को रखते हो, उसके विषय में
यदि कोई तुमसे पूछे तो उसे उत्तर देने के लिए सदा
तैयार रहो। [16]किन्तु विनम्रता और आदर के साथ
ही ऐसा करो। अपना हृदय शुद्ध रखो ताकि यीशु
मसीह में तुम्हारे उत्तम आचरण की निन्दा करने
वाले लोग तुम्हारा अपमान करते हुए लजायें।
[17]यदि परमेश्वर की इच्छा यही है कि तुम दुःख
उठाओ तो उत्तम कार्य करते हुए दुःख झेलो न कि
बुरे काम करते हुए।

[18] क्योंकि मसीह ने भी हमारे पापों
के लिए दुःख उठाया।
अर्थात् वह जो निर्दोष था
हम पापियों के लिये एक बार मर गया
कि हमें परमेश्वर के समीप ले जाये।
शरीर के भाव से तो वह मारा गया
पर आत्मा के भाव से जिलाया गया।

[19]आत्मा की स्थिति में ही उसने जाकर उन
स्वर्गीय आत्माओं को जो बंदी थीं उन बंदी आत्माओं
को संदेश दिया [20]जो उस समय परमेश्वर की
आज्ञा नहीं मानने वाली थी जब नूह की नाव
बनायी जा रही थी और परमेश्वर धीरज के साथ
प्रतीक्षा कर रह था उस नाव में थोड़े से अर्थात्
केवल आठ व्यक्ति ही पानी से बच पाये थे। [21]यह
पानी उस बपतिस्मा के समान है जिससे अब
तुम्हारा उद्धार होता है। इसमें शरीर का मैल छुड़ाना
नहीं, वरन एक शुद्ध अन्तःकरण के लिए परमेश्वर
से विनती है। अब तो बपतिस्मा तुम्हें यीशु मसीह
के पुनरुत्थान द्वारा बचाता है। [22]वह स्वर्ग में
परमेश्वर के दाहिने विराजमान है, और अब स्वर्गदूत,
अधिकारीगण और सभी शक्तियाँ उसके अधीन कर
दी गयी है।

Changed Lives

4 Christ suffered while he was in his body. So you should strengthen yourselves with the same kind of thinking Christ had. The one who accepts suffering in this life has clearly decided to stop sinning. 2 Strengthen yourselves so that you will live your lives here on earth doing what God wants, not the evil things that people want to do. 3 In the past you wasted too much time doing what those who don't know God like to do. You were living immoral lives, doing the evil things you wanted to do. You were always getting drunk, having wild drinking parties, and doing shameful things in your worship of idols.

4 Now those "friends" think it is strange that you no longer join them in all the wild and wasteful things they do. And so they say bad things about you. 5 But they will have to face God to explain what they have done. He is the one who will soon judge everyone—those who are still living and those who have died. 6 Some were told the Good News before they died. They were criticized by others in their life here on earth. But it was God's plan that they hear the Good News so that they could have a new life through the Spirit.

Be Good Managers of God's Gifts

7 The time is near when all things will end. So keep your minds clear, and control yourselves. This will help you in your prayers. 8 Most important of all, love each other deeply, because love makes you willing to forgive many sins. 9 Open your homes to each other and share your food without complaining. 10 God has shown you his grace in many different ways. So be good servants and use whatever gift he has given you in a way that will best serve each other. 11 If your gift is speaking, your words should be like words from God. If your gift is serving, you should serve with the strength that God gives. Then it is God who will be praised in everything through Jesus Christ. Power and glory belong to him forever and ever. Amen.

बदला हुआ जीवन

4 जब मसीह ने शारीरिक दुःख उठाया तो तुम भी उसी मानसिकता को शास्त्र के रूप में धारण करो क्योंकि जो शारीरिक दुःख उठाता है, वह पापों से छुटकारा पा लेता है। 2इसलिए वह फिर मानवीय इच्छाओं का अनुसरण न करे, बल्कि परमेश्वर की इच्छा के अनुसार कर्म करते हुए अपने शेष भौतिक जीवन को समर्पित कर दे। 3क्योंकि तुम अब तक अबोध व्यक्तियों के समान विषय-भोगों, वासनाओं, पियक्कड़पन, उन्माद से भरे आमोद-प्रमोद, मधुपान उत्सवों और घृणापूर्ण मूर्ति-पूजाओं में पर्याप्त समय बिता चुके हो।

4अब जब तुम इस घृणित रहन सहन में उनका साथ नहीं देते हो तो उन्हें आश्चर्य होता है। वे तुम्हारी निन्दा करते हैं। 5उन्हें जो अभी जीवित हैं या मर चुके हैं, अपने व्यवहार का लेखा-जोखा उस मसीह को देना होगा जो उनका न्याय करने वाला है। 6इसलिए उन विश्वासियों को जो मर चुके हैं, सुसमाचार का उपदेश दिया गया कि शारीरिक रूप से चाहे उनका न्याय मानवीय स्तर पर हो किन्तु आत्मिक रूप से वे परमेश्वर के अनुसार रहें।

अच्छे प्रबन्ध-कर्ता बनो

7वह समय निकट है जब सब कुछ का अंत हो जाएगा। इसलिए समझदार बनो और अपने पर काबू रखो ताकि तुम्हें प्रार्थना करने में सहायता मिले। 8और सबसे बड़ी बात यह है कि एक दूसरे के प्रति निरन्तर प्रेम बनाये रखो क्योंकि प्रेम से अनगिनत पापों का निवारण होता है। 9बिना कुछ कहे सुने एक दूसरे का स्वागत सत्कार करो। 10जिस किसी को परमेश्वर की ओर से जो भी वरदान मिला है, उसे चाहिए कि परमेश्वर के विविध अनुग्रह के उत्तम प्रबन्धकों के समान, एक दूसरे की सेवा के लिए उसे काम में लाए। 11जो कोई प्रवचन करे वह ऐसे करे, जैसे मानो परमेश्वर से प्राप्त वचनों को ही सुना रहा हो। जो कोई सेवा करे, वह उस शक्ति के साथ करे, जिसे परमेश्वर प्रदान करता है ताकि सभी बातों में यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर की महिमा हो। महिमा और सामर्थ्य सदा सर्वदा उसी की है। आमीन।

Suffering as a Follower of Christ

12 My friends, don't be surprised at the painful
things that you are now suffering, which are
testing your faith. Don't think that something
strange is happening to you. 13 But you should
be happy that you are sharing in Christ's
sufferings. You will be happy and full of joy when
Christ shows his glory. 14 When people say bad
things to you because you follow Christ, consider
it a blessing. When that happens, it shows that
God's Spirit, the Spirit of glory, is with you.
15 You may suffer, but don't let it be because you
murder, steal, make trouble, or try to control
other people's lives. 16 But if you suffer because
you are a "Christ-follower," don't be ashamed.
You should praise God for that name. 17 It is time
for judging to begin. That judging will begin
with God's family. If it begins with us, then what
will happen to those who don't accept the Good
News of God?

18 "If it is hard for even a good person
to be saved,
what will happen to the one
who is against God and full of sin?"*

19 So if God wants you to suffer, you should
trust your lives to him. He is the one who made
you, and you can trust him. So continue to do
good.

The Flock of God

5 Now I have something to say to the elders in
your group. I am also an elder. I myself have
seen Christ's sufferings. And I will share in the
glory that will be shown to us. I beg you to 2 take
care of the group of people you are responsible
for. They are God's flock. Watch over that flock
because you want to, not because you are forced
to do it. That is how God wants it. Do it because
you are happy to serve, not because you want
money. 3 Don't be like a ruler over those you are

Proverbs 11:31 (Greek version)

मसीही के रूप में दुःख उठाना

12हे प्रिय मित्रों, तुम्हारे बीच की इस अग्नि-परीक्षा
पर जो तुम्हें परखने को है, ऐसे अचरज मत करना
जैसे तुम्हारे साथ कोई अनहोनी घट रही हो, 13बल्कि
आनन्द मनाओ कि तुम मसीह की यातनाओं में हिस्सा
बटा रहे हो। ताकि जब उसकी महिमा प्रकट हो तब
तुम भी आनन्दित और मगन हो सको। 14यदि मसीह
के नाम पर तुम अपमानित होते हो तो उस अपमान को
सहन करो क्योंकि तुम मसीह के अनुयायी हो, तुम
धन्य हो क्योंकि परमेश्वर की महिमावान आत्मा तुममें
निवास करती है। 15इसलिए तुममें से कोई भी एक
हत्यारा, चोर, कुकर्मी अथवा दूसरे के कामों में बाधा
पहुँचाने वाला बनकर दुःख न उठाए। 16किन्तु यदि वह
एक मसीही होने के नाते दुःख उठाता है तो उसे लज्जित
नहीं होना चाहिए, बल्कि उसे तो परमेश्वर को महिमा
प्रदान करनी चाहिए कि वह इस नाम को धारण करता
है। 17क्योंकि परमेश्वर के अपने परिवार से ही आरम्भ
होकर न्याय प्रारम्भ करने का समय आ पहुँचा है।
और यदि यह हमसे ही प्रारम्भ होता है तो जिन्होंने
परमेश्वर के सुसमाचार का पालन नहीं किया है, उनका
परिणाम क्या होगा?

18"यदि एक धार्मिक व्यक्ति का ही
उद्धार पाना कठिन है तो
परमेश्वर विहीन और पापियों के साथ
क्या घटेगा?"*

19तो फिर जो परमेश्वर की इच्छानुसार दुःख उठाते हैं,
उन्हें उत्तम कार्य करते हुए, उस विश्वासमय, सृष्टि के
रचयिता को अपनी-अपनी आत्माएँ सौंप देनी चाहिए।

परमेश्वर का जन-समूह

5 अब मैं तुम्हारे बीच जो बुज़ुर्ग हैं, उनसे
निवेदन करता हूँ: (मैं, जो स्वयं एक बुज़ुर्ग हूँ
और मसीह ने जो यातनाएँ झेली हैं, उनका साक्षी
हूँ तथा वह भावी महिमा जो प्रकट होने को है,
उसका सहभागी हूँ) 2राह दिखाने वाले परमेश्वर
का जन-समूह तुम्हारी देख-रेख में है और निरीक्षक
के रूप में तुम उसकी सेवा करते हो; किसी दबाव
के कारण नहीं, बल्कि परमेश्वर की इच्छानुसार
ऐसा करने की स्वेच्छा के कारण तुम अपना यह
काम धन के लालच में नहीं बल्कि सेवा करने के
प्रति अपनी तत्परता के कारण करते हो। 3देख-रेख

4:18 देखें नीति. 11:31

responsible for. But be good examples to them.
4 Then when Christ the Ruling Shepherd comes,
you will get a crown—one that will be glorious
and never lose its beauty.

5 Young people, I have something to say to
you too. You should accept the authority of the
elders. You should all have a humble attitude in
dealing with each other.

"God is against the proud,
but he is kind to the humble."
Proverbs 3:34

6 So be humble under God's powerful hand.
Then he will lift you up when the right time
comes. 7 Give all your worries to him, because
he cares for you.

8 Control yourselves and be careful! The devil
is your enemy, and he goes around like a roaring
lion looking for someone to attack and eat.
9 Refuse to follow the devil. Stand strong in your
faith. You know that your brothers and sisters all
over the world are having the same sufferings
that you have.

10 Yes, you will suffer for a short time. But
after that, God will make everything right. He
will make you strong. He will support you and
keep you from falling. He is the God who gives
all grace. He chose you to share in his glory in
Christ. That glory will continue forever. 11 All
power is his forever. Amen.

Final Greetings

12 Silas will bring this letter to you. I know
that he is a faithful brother in Christ. I wrote
this short letter to encourage you. I wanted to
tell you that this is the true grace of God. Stand
strong in that grace.

13 The church in Babylon sends you greetings.
They were chosen just as you were. Mark, my
son in Christ, also sends his greetings. 14 Give
each other a special greeting of love when you
meet.

Peace to all of you who are in Christ.

के लिए जो तुम्हें सौंपे गए हैं, तुम उनके कठोर
निरंकुश शासक मत बनो। बल्कि लोगों के लिए
एक आदर्श बनो। 4ताकि जब वह प्रधान रखवाला
प्रकट हो तो तुम्हें विजय का वह भव्य मुकुट प्राप्त
हो जिसकी शोभा कभी घटती नहीं है।

5इसी प्रकार हे नव युवकों! तुम अपने धर्मवृद्धों
के अधीन रहो। तुम एक दूसरे के प्रति विनम्रता
धारण करो, क्योंकि

"परमेश्वर अभिमानीयों का विरोध करता है
किन्तु दीन जनों पर सदा
अनुग्रह रहता है।" *नीतिवचन 3:34*

6इसलिए परमेश्वर के महिमावान हाथ के नीचे
अपने आपको नवाओ। ताकि वह उचित अवसर
आने पर तुम्हें ऊँचा उठाए। 7तुम अपनी सभी
चिंताएँ उस पर छोड़ दो क्योंकि वह तुम्हारे लिए
चिंतित है।

8अपने पर नियन्त्रण रखो। सावधान रहो। तुम्हारा
शत्रु शैतान एक गरजते सिंह के समान इधर-उधर
घूमते हुए इस ताक में रहता है कि जो मिले उसे
फाड़ खाए। 9उसका विरोध करो और अपने विश्वास
पर डटे रहो क्योंकि तुम तो जानते ही हो कि समूचे
संसार में तुम्हारे भाई बहन ऐसी ही यातनाएँ झेल
रहे हैं।

10किन्तु सम्पूर्ण अनुग्रह का स्रोत परमेश्वर जिसने
तुम्हें यीशु मसीह में अनन्त महिमा का सहभागी
होने के लिए बुलाया है, तुम्हारे थोड़े समय यातनाएँ
झेलने के बाद स्वयं ही तुम्हें फिर से स्थापित
करेगा, समर्थ बनाएगा और स्थिरता प्रदान करेगा।
11उसकी शक्ति अनन्त है। आमीन।

पत्र का समापन

12मैंने तुम्हें यह छोटा-सा पत्र, सिलवानुस के
सहयोग से, जिसे मैं अपना विश्वासपूर्ण भाई मानता
हूँ, तुम्हें प्रोत्साहित करने के लिए कि परमेश्वर का
सच्चा अनुग्रह यही है, इस बात की साक्षी देने के
लिए लिखा है। इसी पर डटे रहो।

13बाबुल की कलीसिया जो तुम्हारे ही समान
परमेश्वर द्वारा चुनी गई है, तुम्हें नमस्कार कहती
है। मसीह में मेरे पुत्र मरकुस का भी तुम्हें नमस्कार।
14प्रेमपूर्ण चुम्बन से एक दूसरे का स्वागत सत्कार
करो।

तुम सबको, जो मसीह में हो, शांति मिले।